DIGITAL EDITION
ISSUE NO.29

लोटपोट

51 YEARS ANNIVERSARY

हँसी और मस्ती की पाठशाला

मोटू पतलू

पतलू बना जासूस

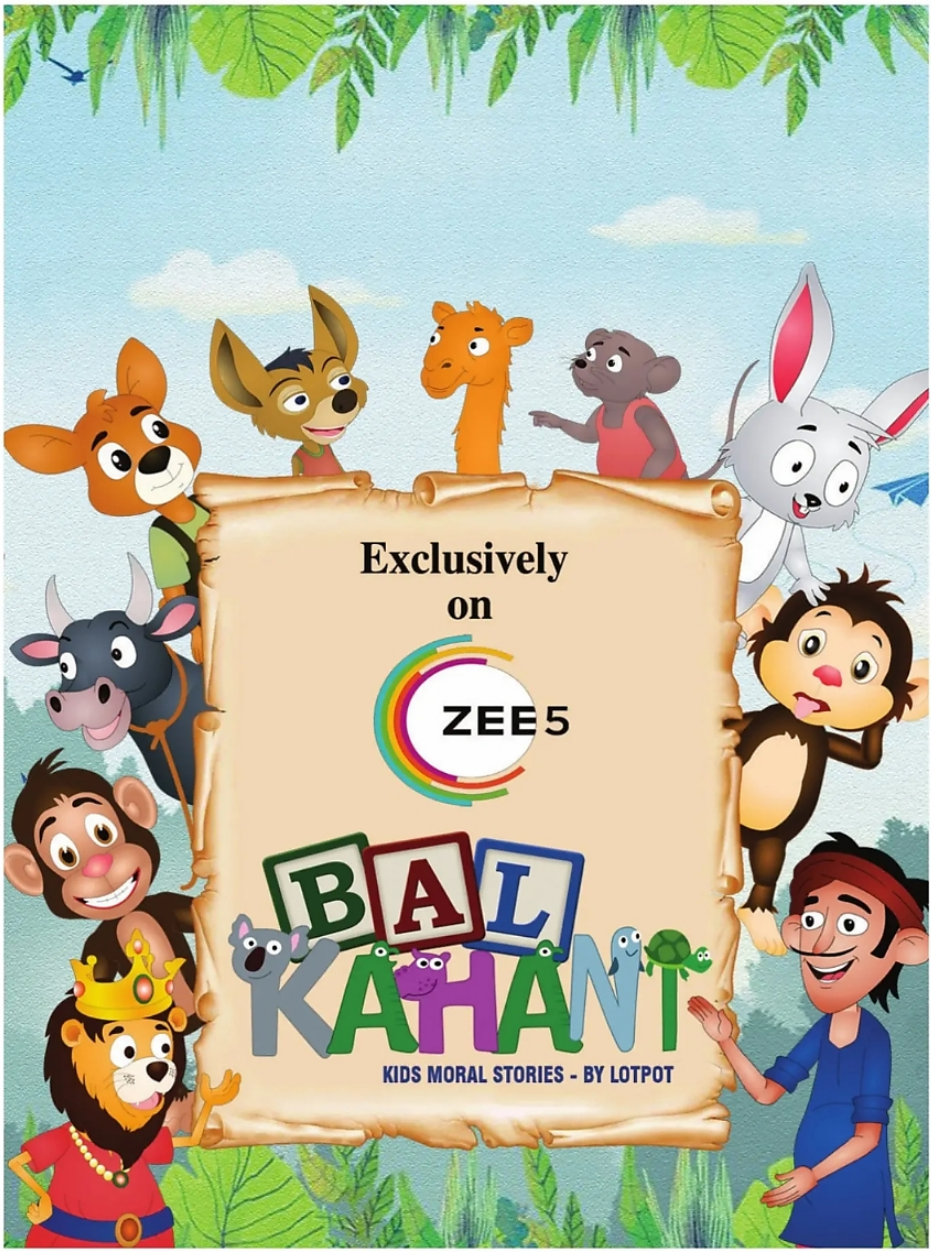
Exclusively
on
ZEE5
BAL
KAHANI
KIDS MORAL STORIES - BY LOTPOT

लोटपोट

Visit: www.lotpot.com

DIGITAL EDITION

ISSUE NO. 29

Founder
Lt. Sh. A.P. Bajaj

Chief Editor
P. K. Bajaj

Editor
Aman Bajaj

Joint-Editors
Anushka
Amisha

Editorial Department
Concept illustration direction
Harvinder Mankkar

Editorial Address:
LOTPOT FORTNIGHTLY
A-5, Mayapuri, Phase-I,
New Delhi-110064.
Ph.: 28116120, 28117636
Fax .: 91-11-41833139
Email: edit@mayapurigroup.com
Web.: www.mayapurigroup.com

Printed at ARORBANS PRESS,
Shree S. L. Prakashan
A-5, Mayapuri, Phase-I, N.D.110064.
Owner, Publisher, Printer
Parmod Kumar Bajaj
Printing Place:
A-5, Mayapuri, Phase-I, New Delhi-110064.

For Advertising: Shekhar Chopra
E-mail: shekhar@mayapurigroup.com

सम्पाकीय की कलम से

सफलता का रहस्य

यह समाचार जंगल की आग की तरह सारे अमरीका में फैल गया कि देश के एक भाग में सोने की खानों का पता लगा है और कोई भी जा कर सोने की खुदाई कर सकता है। अमरीका के इतिहास में यह घटना गोल्ड रश के नाम से जानी जाती है।

हजारों की संख्या में लोग उस क्षेत्र की ओर चल पड़े सभी के मन में सोना खदानों से निकाल कर रातों रात अमीर वन जाने की चाह थी।

किन्तु सोना फलों की तरह पेड़ पर नहीं लटकता। उसे पाने के लिए गहरी खुदाई करनी पड़ती है। कितनी खुदाई के बाद सोना पाये जानी वाली चट्टान तक पहुंचा जा सकेगा। यह अनिश्चित है।

सभी लोगो में इतना धैर्य नहीं था कि सोने वाली चट्टान तक पहुंचने तक खुदाई करते रहें। हजारों लोग अधूरी खुदाई छोड़ कर वहां से चले आये। बाद में पता लगा कि जहां तक उन्होंने खुदाई कर ली थी। बस उस से केवल 1–2 मीटर नीचे सोने वाली चट्टाने थी।

निराश और असफल एसे व्यक्यिों की असफलता से हमें एक ही सीख मिलती है। सड़क के किनारे पेड़ो पर लटकते हुए फल केवल कहानियों में पाये जाते है। वास्तविक जीवन में सफल होने का केवल एक ही गुण है जब तक सफलता न मिल जाय लक्ष्य की प्राप्ति के लिए निरंतर प्रयास करते रहो।

LOTPOT title is registered with the R.N.I.,Govt. of India. All rights are reserved with publisher for every content published in Lotpot. Nothing should be reproduced in any form without the permission of publisher. All contents published in the Lotpot are work of fiction and any resemblence to people,place etc is purely incidental. Illustrations are based on the imagination of artist and editor and /or pubisher are not responsible for it. Editor and publisher may not be in agreement with the opinion of writers over the published contents. If any body has any objection towards any published content, they are welcome to submit the same with the publisher and it will be published as well. All disputes will be subject to the jurisdiction of Delhi only.Rs 4/- surcharge extra for Nepal, Srilanka, Dubai and other Gulf countries.

©COPYRIGHT
नटखट नीटू
○ हरविन्द्र मांकड
हा हा हा मैं हूं कटारू..जिसे छू लू वो भस्म हो जाता है मेरे करंट से... हा हा हा
मगर तू मेरे नटखट नगर को बर्बाद नही कर पायेगा, कटारू
रोबो के होते तो बिलकुल नहीं
रोबो.. जाओ फामूर्ला गैस लेकर आओ..

हा हा हा.. उससे पहले ही मैं तुझे करंट मार मार कर भस्म कर दूंगा.. नीटू हा हा हा
आह!!
ये गैस इसका करंट खत्म कर देगी।
हा हा हा.. पर तेरा नीटू नहीं बच पायेगा।

मैंने नीटू के चारो तरफ करंट की दीवार बना दी है। क्योंकि उसे करंट ने घेर लिया है
रोबो के होते सब दीवारें बेकार हो जाती है।..
रोबो ने फार्मूला गैस कटारू पर छोड़ दी..

फार्मूला गैस ने कटारू के सारे फक्शंन फेल कर दिये।
ये किरणे नीटू को करंट से बचा लेगी।
वाह.. थैंक्यू रोबो
कटारू लक्ष्य विहिन होकर शून्य में चला गया।

शाबाश रोबो.. तुमने समय पर सहायता करके मुझे व नटखट नगर दोनो को बचा लिया।
ये तो मेरा फर्ज था नीटू..

बाल कहानी

सफलता और भाग्य

नैपालियन के पास एक बार उस का परिचित एक व्यक्ति को लेकर आया जिसे वह सेना नायक के पद पर नियुक्त कराना चाहता था

यह एक बहुत कुशल और अनुभवी सेना नायक रह चुका है उसके सिफार्शी परिचित व्यक्ति ने कहा- 'नैपोलियन ने प्रश्न किया, 'क्या यह भाग्यशाली भी है?'

योग्य और जीवन में सफल व्यक्ति भी भाग्य में विश्वास करते है। हमारे प्रयास में भाग्य की क्या भूमिका होनी चाहिए?

इस प्रश्न का उत्तर आपको इस कहानी से मिल जायगा एक वास्तविक घटना है। मै कोलकाता आया हुआ था और मेरी इच्छा हुई कि मै योगी रामकृष्णा परमहस की स्मृति से जुड़ा हुआ दक्षिणेश्वर मन्दिर देखने जाऊंगा। मै हुगली नदी के दूसरे किनारे पर था और मन्दिर तक पुहंचने के लिये नाव पर हुगली नदी पार करना आवश्यक था। नदी पूरे उफान पर थी और लहरों का उतार-चढ़ाव डरावना था। मैंने नाविक से पूछां 'क्या नदी पार करना सुरक्षित है?'

नाविक ने उत्तर दिया, 'प्रत्येक सुबह मै यहां आता हूं और श्रद्धालुओं को नदी के उस पार ले जाता हूं। मुझे अच्छी तरह मालूम है कि हवा की दिशा और गति, नदी का बहाव, तूफान की सम्भावना इन सब पर मेरा कोई नियंत्रण नहीं है। किन्तु मेरे हाथों में पतवार है और मन में विश्वास है कि मै नदी पार कर सकता हूं।

मेरे भाग्य का निर्णय उन शक्तियों द्वारा होता है जिन पर मेरा कोई नियंत्रण नहीं है पर उन से भयभीत होकर मैं अपना नित्य का कार्य कम बन्द नहीं कर सकता।

नदी में मै अकेला नाविक नहीं होता हूं कई मछुआरे भी नदी में अपने जाल डाल कर मछलियां पकड़ने निकलते है यदि वे हिम्मत न करें तो अनेकों लोगों को अपने भोजन में मछलियां नहीं मिल सकती। दुर्घटनाएं हो सकती है पर इन के डर से हम प्रयास करना तो बद नहीं कर सकते।

मेरी सारी शंकाओं का निर्वाण हो गया। भाग्य का हमारे जीवन में निर्णय स्थान होता है पर इस पर हमारा नियंत्रण नहीं है और इस कारण प्रयास करते समय हमे भाग्य की चिंता नहीं करना चाहिए। असफलता के अनेकों कारण हो सकते है। भाग्य उन में से केवल एक है। अधिकतर अफलताओं का कारण हमारा भाग्य नहीं होता। हमारे परिश्रम में कभी हमारी अधिकांश असफलताओ का मूल कारण होती है।

बूझो तो जाने

(क) वह क्या है जिस का चेहरा है, दो हाथ भी है किन्तु पैर नहीं है।

(ख) अपने पैसे को दो गुना करने का सब से सरल तरीका क्या है।

उत्तर:- (क) घड़ी (ख) उसे शीशे के सामने रख दो।

बाल कहानी

राम जी का डिब्बा

मोहल्ले में सभी उन्हे ताई जी कहते थे।

वे एक बेवा थी और उन की आवश्यकताएं न्यूनतम थी। उन का गुजारा मकान के एक हिस्से के किराये से हो जाता था इस के अतिरिक्त उन का पति कुछ धन राशि छोड़ गया था जो उन की गुजारे के लिए पर्याप्त हो जाती थी। ताई जी बड़े धार्मिक बिचारों वाली थी। उनके पास धन का अभाव था किन्तु वे सदा जरूरत मन्द गरीबों की मदद के लिए तैयार रहती थी।

मोहल्ले में अधिकतर मध्यम वर्गीय परिवार थे। सभी के घर महीने के अन्तिम दिनों में अभाव की स्थिति रहती थी। एक दूसरे से उधार मोहल्ले के सभी परिवारो की सामान्य प्रक्रिया थी। एक कटोरी शकर या घी या चावल का लेन देन बराबर चलता रहता था। महीने के पहले सप्ताह में सारे उधार चुका दिए जाते थे।

घरों में पैसे की तंगी हमेशा लगी रहती थी किन्तु उधार देने की सार्मथ्य किसी परिवार में भी नही थी। सभी को ताई जी का सहारा था।

यह भी जानें

ऐसा माना गया है कि संसार में 4200 धर्म है धर्म शब्द को कभी कभी पंथ का पर्यायवाची भी माना जाता है। किन्तु धर्म सर्वमान्य होता है जब कि पंथ कुछ विशेष लोगो के विश्वास पर आधारित होते है।

ताई जी ने कमरे के एक कोने में एक छोटा मन्दिर बना रखा था और वही एक डिब्बा रखा रहता था उस डिब्बे में सदा ही कुछ रूपये और सिक्के पडे़ रहते थे। कोई भी ताई जी से उधार ले सकता था किन्तु वे कभी अपने हाथ से नही देती थी।

जब भी कोई गृहणी उधार मांगने आती, ताई जी कह देती, 'मन्दिर में राम जी का डिब्बा रखा है अपनी जरूरत के अनुसार उस में से ले लो। सुविधानुसार वापस कर देना। राम जी हमारे परिवार की रक्षा करते है। उन का धन्यवाद करो-मेरा नही' डिब्बे से उधार लिए गए पैसे हमेशा पूरे के पूरे वापस आ जाते थे।

एक दिन एक बड़ी अनहोनी घटना हुई। ताई जी ने देखा कि राम जी का डिब्बा बिलकुल खाली पड़ा है उन्हे चिंता हो गई, 'अब मै किसी जरूरतमन्द गृहणी की मदद कैसे कर पांऊ गी?'

ताई जी के पास कोई आभूषण नहीं थे केवल एक हाथ मे चार चांदी की चूड़िया पड़ी रहती थी। वे पड़ोसी सुनार के घर गई और उस की पत्नी से कहा कि चूड़िया गिरवी रखले और उन्हे कुछ रूपये उधार दे दो। पत्नी इस प्रकार का व्यवहार नही करती थी किन्तु ताई जी को मना नही कर सकी। रूपये ला कर ताई जी ने तुरंत राम जी के डिब्बे में डाल दिये।

सुनार की पत्नी के माध्यम से सारे मोहल्ले में इस घटना की खबर आग की तरह फैल गई। सभी गृहाणियों इस बात से बहुत दुखी थी कि ताई जी को अपनी चूड़िया गिरवी रखनी पड़ी ताकि उन की सहायता मे कोई कमी न हो पाए। एक एक कर के मोहल्ले की सभी गृहणियां ताई जी के घर आई और कुछ सिक्के राम जी के डिब्बे में डाल गई

और फिर आखों में आंसू भरे एक गृहणी आई और कहने लगी, 'मैंने सारे पैसे निकाले है पर मुझे इस राज की सजा मिल चुकी है। मेरे पुत्र की टांग की हड्डी टूट गई है और वह दर्द से चिल्ला रहा है मै भी बहुत दुखी हूं। मै उधार के पैसे डिब्बे में डाल रही हूं। आप मेरे परिवार के लिए प्रार्थना करे राम जी आप की बात जरूर सुनेंगे।'

और फिर शाम को पड़ोसी सुनार आया 'मेरी पत्नी ने मुझे आदेश दिया है कि मै आप की चूड़ियां वापस कर दूं और जो पैसे उस ने आप को दिये है वह राम जी के डिब्बे में डाल दूं' उस की आंखों से आंसू बह रहे थे और उसने छलकती आंखो से चूडियां ताई जी के हाथ पर रख दी। इस घटना के बाद फिर कभी राम जी का डिब्बा खाली नहीं हुआ।

मोटू पतलू

पतलू बना जासूस

कथानक एवं चित्रांकन –हरविन्द्र मांकड़

LOTPOT DIGITAL EDIT

जुबान संभाल के मैं.. जासूस पतलू बांड हूं.. जासूसी नावल पढ़-पढ़ के मैं पूरा जासूस बन चुका हूं
ओये जासूस की दुम.. मेरे मोबाइल का चार्जर नहीं मिल रहा.. तुमने देखा है क्या?
यानि मुझे पहला केस मिल गया.. मोबाइल चार्जर की तलाश..

पर ढूंढ तो सही.. मेरा मोबाइल बंद हो गया है।
जासूस पतलू बांड का मानना है कि जासूसी हमेशा जड़ से करनी चाहिए। यानि जहां से मोबाइल खरीदा गया था
वो तो मैंने झटके से खरीदा था
बस.. क्लू मिल गया.. वही छिपा है इस चार्जर की गुमशुदगी का राज.. फालो मी
अरेरे.. आराम से.. मेरे शरीर का तो ख्याल कर.. हम्फ.. हम्फ

पतलू.. यार मेरा चार्जर काम नहीं कर रहा तूं किसी ठीक करने वाले को जानता है क्या?
देखा.. चोर खुद ही बोल पड़ा..

तेरा चार्जर खराब हुआ तो तूने मोटू का चार्जर चुरा लिया..

क्या?.. अरे हम दोनों के फोन का तो मॉडल ही अलग-अलग है.. मै इसके फोन के चार्जर का क्या करूंगा भला?

तो जो फोन तूने मोटू को बेचा था वो कहां से लिया था?

वो.. वो तो घसीटे से लिया था और मोटू को बेच दिया था

मैं सही रास्ते पर जा रहा.. चोर घसीटा राम ही है।
मेरे को किस खुशी में याद कर रहे हो?
चोरी के इल्जाम में गिरफ्तार करने के लिए.. तुमने मोटू के फोन का चार्जर चुराया है

तूने झटके को जो फोन दिया था वो कहां से लिया था
पागल हो गयी है.. मेरे पास तो मोबाइल ही नही है.. फिर चार्जर का मै क्या करूंगा
बहुत पुरानी बात है.. पर.. हां अपने पड़ोसी पहलवान बजरंगी से लिया था
यानि चोर बजरंगी है
अब तो मुझे भी लग रहा है पतलू
मेरी जासूसी कभी गलत नहीं हो सकती चोर बजरंगी ही है।
बजरंगी पहलवान को जब बात पता चली।
मै चोर हूं
हां तूने मोटू का चार्जर चुराया है
ओये.. दस मोबाइल पड़े है मेरे घर. वो भी लेटेस्ट.. मै तुम्हारा दो रूपेय का चार्जर चुराऊंगा.. पर मुझ पर इल्जाम लगाने की सजा तो मिलेगी..

आज के बाद सोच समझ कर इल्जाम लगाना.. बिना सबूत किसी को चोर कहोंगे तो ऐसे ही हाल करेगा तुम्हारा
आह मर गये.. हाय..

बाल कहानी

किताबें और ज्ञान

केवल पुस्तके पढ़ लेने से ही कोई व्यक्ति अच्छे रूप से ज्ञानी नही हो जाता। जीवन में कई अन्य कुशलताओं का भी उतना ही महत्व है। प्रोफेसर राव को इस बात का ज्ञान काफी समय के बाद हुआ राव एक विश्वविद्यालय में प्रोफेसर के पद पर आसीन थे। अपने विषय के ज्ञान के लिये उन का

चुटकुला

अध्यापक ने देखा कि विद्यार्थी कक्षा में ध्यान नहीं दे रहा है

अध्यापक-पप्पू इन दो वाक्यो का जोड़ कर एक वाक्य बनाओं

मैं साइकिल पर स्कूल जा रहा था

मैंने एक मृत व्यक्ति देखा..

पप्पू (कुछ सोच कर)- मैंने स्कूल जाते समय एक मृत व्यक्ति को साइकिल चलाते हुए देखा...

शिक्षित समाज में बहुत आदर और सम्मान किया जाता था। अधिकाश उच्च शिक्षा प्राप्त व्यक्ति व्यवहार कुशल भी हो जाते है पर प्रोफेसर राव के साथ ऐसा नही था। वह हर उस व्यक्ति को जो उन से कम पढ़ा लिखा हो उसे वह निरादर की दृष्टि से देखते थे। नदी के तट पर आकर प्रोफेसर राव ने एक मल्लाह से पूंछा कि वह उन्हें नदी के उस पार पहुंचा देगा। मल्लाह ने स्वीकृति दी क्योंकि यही तो उस का रोज़गार था ''तुम्हारी नाव बहुत गन्दी है। तुम्हें शायद किसी स्कूल में शिक्षा नही मिली अन्यथा तुम सफाई का महत्व जानते होते'' प्रोफेसर राव ने मल्लाह को भड़कते हुए कहा नाव ठीक है। चालू है मल्लाह ने उत्तर दिया। उत्तर से प्रोफेसर राव को बड़ी निराशा हुई। उन्होंने क्रोधित होकर कहा, ''तुम्हें भाषा और व्याकरण का कुछ भी ज्ञान नही है। तुमने अपना आधा जीवन व्यर्थ ही बर्बाद कर दिया'' मल्लाह चुपचाप नाव चलाता रहा अचानक आकाश पर काले बादल घिर आए। तेज हवा के कारण नाव बुरी तरह हिलने लगी। ''तूफ़ान आने वाला है। हो सकता है कि नाव डूब जाएगी। आशा है आप को तैरना आता होगा'' मल्लाह ने प्रश्न किया। नही मुझे तैरना नही आता घबराए हुए प्रोफेसर राव ने उत्तर दिया। तब तो आप ने अपना सारा जीवन ही व्यर्थ बर्बाद कर दिया। आप का पुस्तकी ज्ञान आपको बचाने में आप की कोई सहायता नही कर पायेगा। प्रोफेसर राव को पसीना आ गया। उन्हे मृत्यु सामने दिखाई देने लगी। प्रोफेसर राव ने इस बार बड़े आदर पूर्वक मल्लाह से कहा, ''मुझे बचा लो। मैं तुम्हारी कुशलता का बहुत आदर करता हूँ। केवल तुम्हारी योग्यता ही मेरी जान बचा सकती है'' मल्लाह पूरे आत्म विश्वास से नाव चलाता रहा। थोड़ी ही देर मे वे सुरक्षित नदी तट पर पहुँच गये। एक घटना ने ही प्रोफेसर राव की आखें खोल दी थी। जीवन में केवल किताब ज्ञान ही सब कुछ नही होता। अन्य कुशलताओं का भी उतना ही महत्व है। कि हमें उस ज्ञान और उन कुशलताओं के प्रति भी आदर भाव रखना चाहिये जो दूसरों मै है किन्तु हम में नही है।

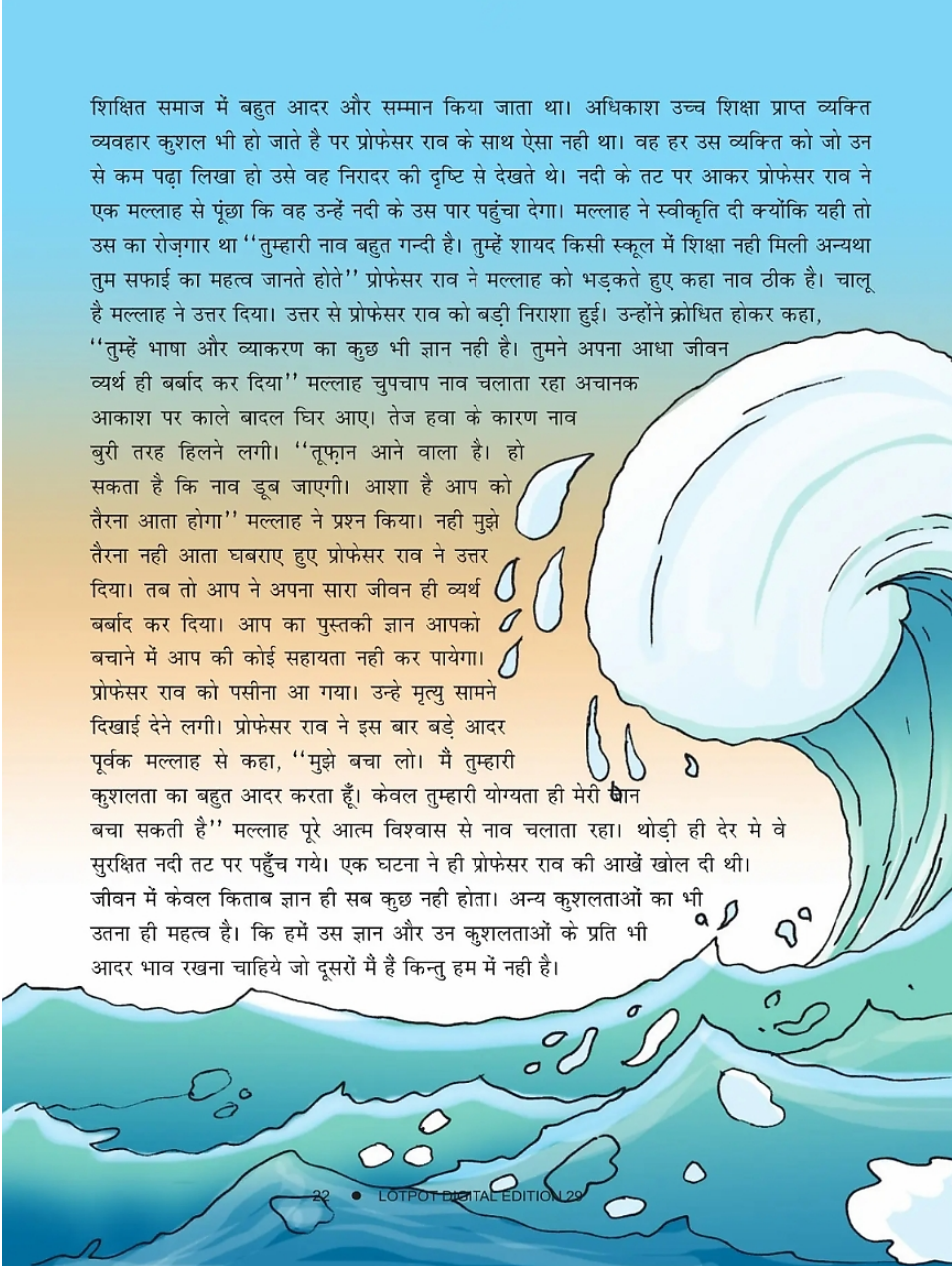

आर्ट क्राफ्ट

अखरोट का कछुआ

सामग्री–

1.अखरोट, 2.कार्ड की शीट, 3.पेंसिल, 4. रबर, 5.कैंची, 6.गोंद, 7.रंग

कछुए को बनाना सबसे आसान है और आप इसके साथ खेलते हुए काफी अच्छा महसूस करेंगे।

विधि

स्टेप 1– अखरोट को दो हिस्सो में तोड़ ले। अखरोट का एक हिस्सा बराबर टूटना चाहिए।

स्टेप 2– अब इस टूटे हुए हिस्से को कार्ड की शीट पर रखे। और कछुए की टांगे, मुँह और पूंछ बनाए।

स्टेप 3– कार्ड की शीट को इसी आकार में काटे और हरा रंग भरे।

स्टेप 4– अब अखरोट के चपटे हिस्से के किनारों में गोंद लगाए और उसे कार्ड शीट पर लगा दे।

स्टेप 5– अब कछुए के पैर नीचे की तरफ गिरा दे और उसका सिर ऊपर उठा दे। अब आपका कछुआ बनकर तैयार है। आप इसके गले में एक पतली रस्सी भी डाल सकते है ताकि यह आगे बढ़ सके।

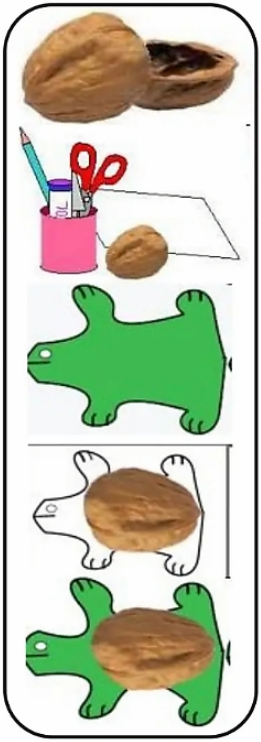

©COPYRIGHT

शेखचिल्ली और नूरी जिन्न

एक दिन नूरी जिन्न छोटा बच्चा बना शेखचिल्ली के साथ उसकी खटारा गाड़ी में बैठा था, तभी वहां हवलदार बोलबोले और हवलदार तिनका राम आ गए।

जाना कहां है?
बस यूंही सैर सपाटा करना है। आप तो धक्का लगाते रहो..
काफी धक्का लगाने पर भी गाड़ी स्टार्ट नहीं हुई तो..
अरे बोलेबोले, लड़के की बातों में आकर मुझसे भी धक्के लगवा रहा है, अरे चालान कर छोकरे का जो इतनी छोटी उम्र में गाड़ी चला रहा है।
मै कहां चला रहा हूं गाड़ी? वो तो आप धक्के से चला रहे हो!
तो फिर गाड़ी स्टार्ट क्यों नहीं हुई अब तक?
इसमें इंजन ही नहीं है, बस गाड़ी का खोखा ही खोखा है।
इंजन नहीं है तो स्टार्ट कैसे होगी हवलदार जी?
इंजन नही है गाड़ी में? पहले क्यों नहीं बताया तुमने!
आपने पूछा ही कब? बस धक्के लगाते रहे।
और कहते रहे कि 18 साल से कम उम्र में गाड़ी चलाना अपराध है।

और एक बात बताऊँ मेरी उम्र 18 साल से ज्यादा है।
नही नही, मेरी उम्र 180 साल... से भी ज्यादा है
सच सच बताऊं? मेरी उम्र 18000 साल से भी ज्यादा है।

हमारे आदर्श

सी.वी.रमन

चन्द्रशेखर वैकंट रमन का जन्म तामिलनाडु में 7 नवम्बर 1888 में हुआ था। उन के पिता भैतिक विज्ञान के अध्यापक थे।

रमन एक प्रतिभावान छात्र थे। 12 वर्ष की आयु में उन्होने मैट्रिक्लेशन की परीक्षा पास की और उच्च शिक्षा के लिये वे विदेश जाना चाहते थे। एक अंग्रेज डाक्टर की सलाह पर उन्होंने यह इरादा छोड़ दिया और मद्रास के प्रेसीडैन्सी कॉलेज में प्रवेश ले लिया। 1904 में स्नातक और 1907 में भौतिक विज्ञान में एम.एस सी की डिग्री प्राप्त की।

वर्ष 1907 में सिविल सर्विस प्रतियोगिता में उत्तीर्ण होने के परिणाम स्वरूप कलकत्ता में उनकी नियुक्ति सहायता अकाऊटैन्ट जनरल के पद पर हो गयी। पर उन की रूचि विज्ञान पर आधारित कार्य में थी। वर्ष 1917 में उन्होंने अपने पद से त्यागपत्र दे दिया और कलकत्ता विश्वविद्यालय में भौतिक विज्ञान के प्रोफेसर के पद पर कार्य करने लगे। 1921 में उन्होनें समुद्र के मार्ग से यूरोप की यात्रा की इसी यात्रा काल में उन का ध्यान समुद्र के पानी के नीले रंग की ओर गया।

ऐसा माना जाता था कि आकाश की परछाई के कारण सागर का जल नीला दिखता है। भारत वापस आने पर रमन इस नीले रंग के रहस्य की खोज में लग गये। उन्होनें इस दिशा में अनेको प्रयोग किये और यह जानने का प्रयास किया कि पानी और पारदर्शी बर्फ की शिला में प्रकाश का छितराव कैसे होता है।

इन प्रयोगो के परिणामों के आधार पर रमन ने समुद्र के पानी के नीले रंग का वैज्ञानिक स्पष्टीकरण किया।

बंगलौर में वैज्ञानिकों की एक सभा में 16 मार्च 1928 को रमन ने 'रमन इफैक्र' की खोज प्रस्तुत की और इस खोज के लिये वर्ष 1930 में उन्हे नोवेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

बाल कहानी

छोटे हकीम जी

गांव के पास 10 कि.मी तक कोई अस्पताल नही था। जब भी कोई बीमार पड़ता उस का एक मात्र सहारा गांव के हकीम ही थे। दवाईयों के नाम पर उनके पास कुछ जड़ी बूटियां थी और उन्ही के सहारे उन का काम ठीक ठाक चल जाता था। गांव के लोगो का जीवन बड़ा सरल था। सभी स्वस्थ रहते थे। कभी कभी जब गांव में किसी के घर कोई भोज होता तो सभी लोग बहुत खुल कर खाते थे। और इसी करण कुछ लोगों को पेट कि शिकायत हो जाती थी। हकीम भी अपने तजुर्बे के आधार पर उन्हें जुलाब की दवा दे देते थे। पेट साफ होते ही सभी मरीज़ एक बार फिर सामान्य जीवन व्यतीत करने लगते थे। हकीम जी की मृत्यु के बाद यह जिम्मेदारी उनके लड़के पर आ पड़ी। दवाओं को लेकर उसका ज्ञान केवल जुलाब कि पुड़िया तक सीमित था। हकीम भी कुछ ज्योतिष का ज्ञान भी रखते थे। हकीम होने के साथ साथ वे नजमी होने का भी दावा करते थे। गांव के लोगो को यकीन था कि उन का बेटा भी भविष्यवाणी करने की योग्यता रखता होगा। ''मेरा गधा खो गया है वह शाम को चरने गया था और फिर लौट कर नही आया कुछ ऐसा कीजिये कि मेरा गधा मिल

जाए'' ग्रामवासी गधे का मालिक बड़ी उम्मीद लेकर छोटे हकीम जी के पास आये थे। छोटे हकीम जी ने अपने ज्ञान के अनुसार जुलाब की पुड़िया दे दी। पुड़िया का असर हुआ सुबह होने से पहले ही गधे का मालिक पेट हल्का करने के लिये गांव के बाहर निकल पड़ा। वही उसने देखा कि उस का गधा चोट खाया हुआ एक पेड़ के नीचे दर्द से कराह रहा है। गधे को चोट लगा हुआ पाया था। मालिक गधे को देख कर बहुत खुश हुआ वह धीरे धीरे उस को घर ले आया। गधा मिलने की खबर सारे गांव में फैल गई और हकीम जी के ज्योतिष ज्ञान की दूर-दूर तक चर्चा होने लगी। कई दिन बाद गांव के राजा की खबर मिली कि उनके दुश्मन कि सेना उन पर आक्रमण करने के लिए निकल पड़ी है। राजा मुकाबले के लिए तैयार नही था। इसलिए उसने छोटे हकीम ज्योतिषी से सलाह मांगी। पर हकीम जी के पास केवल एक ही शकिृथी। उन्होने आदेश दिया कि जुलाब की एक एक पुड़िया राजा के हर सैनिकको को खिला दी जाए। पुड़िया का असर हुआ सभी सैनिक स्वस्थ सैनिक कमांडर तक पहुँचा दी बड़ी कोशिश के बाद हकीम जी से कहा पुड़िया चुप चाप प्राप्त कर ली गई। प्रत्येक सैनिक को मुकाबले के लिये और अधिक सशक्त बनाने के लिये तीन तीन पुड़िया खिला दी गयी। परिणाम भयंकर हुये। दुश्मन के सैनिको का सारा समय शौचालय में ही बीतने लगा ज्यो त्यों कर के वे सभी वापस लौट गये। एक बार फिर छोटे हकीम जी की दवाने अपना कमाल दिखला दिया था। छोटे हकीम जी की हकीम और ज्योतिषी की सफलता की छवी अब दूर दूर तक फैल चुकी थी।

पढ़ो और जानो

एलिस ब्राडन द्वारा वर्ष 1889 में लिखी गई पुस्तक फूल्स ऑफ नेचर विश्व की सबसे पहली पुस्तक थी जिस की सबसे अधिक प्रतियां बिकी।

सिड़नी-आस्ट्रेलिया वर्ष 2012 में सिर पर किताबे संतुलित करने का रिकार्ड बना। इस में एक ही स्थान पर एक ही समय में 998 पुस्तकें सिर पर रखी गई।

जंगल

पांडा

पांडा काले और सफेद रंग के भालू होते है जो मध्य चीन के जंगलों में रहते है। पहले पांडा नीची भूमि वाले क्षेत्र में रहते थे। पर खेती और बाकी विकास के लिए बड़े पांडों को हिमालय तक सीमित कर दिया गया। एक बड़ा पांडा भालू के आकार की तरह होता है। उसके कान, टांगो और कंधे पर काले रंग के फर होते है। इस जानवर का बाकी हिस्सा सफेद रंग का होता है। हालांकि वैज्ञानिकों को पांडा के काले और सफेद रंग के बारे में पता नहीं चल पाया है। करीब एक हज़ार पांडा जंगल में रहते है। और कई पांडा चिड़ियाघर में रहते है।

चीनी वैज्ञानिकों के मुताबिक चिड़ियाघर में रहने वाले पांडा करीब 35 साल की उम्र से ज़्यादा है। एक बड़े पांडे का भोजन काफी ज़्यादा होता है। पांडा ज़्यादातर घास, छोटे चूहे और सुनहरी हिरण का बच्चा खाते है। चिड़ियाघर में बड़े पांडा लकड़ी, गन्ना, चावल का दलिया, गाजर, सेब, चुकंदर और बिस्कुट खाते है।

पांडा के बारे में

पांडा धरती पर 20-30 वर्ष से रह रहे है पांडा का जीवन विस्तार जंगल में लगभग 20 वर्ष होता है पाले जाने पर यह 25-30 साल तक जीवित रह सकते है।

यात्रा

औरंगाबाद

औरंगाबाद को उसका यह नाम 1653 में प्राप्त हुआ जब औरंगजेब दक्षिण के वाइसरॉय बने और उन्होंने इस शहर को अपनी राजधानी बनाया। इस जगह की स्थापना 'खिरकी' के रूप में मलिक अंबर ने 1610 में की थी जो उस समय,

मुर्तजा निजाम शाह द्वितीय के प्रधान मंत्री थे। दुनिया भर से टूरिस्ट यहां पत्थर से तराशे गये प्राचीन जगत का आनन्द लेने आते है और गाबाद हवाई अड्डा, शहर से लगभग 10 किलोमीटर दूर है।

ट्रेन से, यह दक्षिण-मध्य रेलवे के मनमाड़-कचीगुडा क्षेत्र में स्थित है।

बस-सेवा-मुंबई, पुणे, अहमदनगर, जलगांव, शिरड़ी, नासिक, नागपुर और ओसमानाबाद से उपलब्ध है।

एम टी डी सी हॉलीडे रिसोर्ट ठहरने के लिए उपयुक्त स्थान है। यहां कई और होटल और रिसोर्ट भी हैं जहां रूकने की सुविधा उपलब्ध है

अजंता-एलोरा औरंगाबाद से लगभग 30 किलोमीटर दूर है। यहां उप गुफाएं है जिनमें कई मंदिर, मोनेस्ट्री आदि है। भगवान शिव का विश्व प्रसिद्ध कैलाश मंदिर यहीं है जो एक ही पत्थर को तराश कर बनाया गया है।

ग्रिशनेश्वर मंदिर एलोरा से 1 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।

दौलताबाद में एक पहाड़ी किला है जिसका रख रखाव दुनिया के बेहतरीन किलो में से है। मोहम्मद तुगलक ने 14 वीं शताब्दी में इसका नाम किस्मती शहर रख दिया था।

बीबी का मकबरा, औरंगजेब ने अपनी मां की याद में बनवाया था ऐसा लगता है, दूसरा आगरा का ताजमहल है।

नपचक्की 17 वीं शताब्दी की जलचाक है। इसका पानी 6 किलोमीटर दूर एक नदी पर बांध बना कर मिट्टी की पाइप के जरिए पहंचाया जाता है।

औरंगाबाद से 24 किलोमीटर दूर है बानी बेगम गार्डन। औरंगाबाद की कब्र खुलदाबाद में है जो कि एक पुराना शहर है।

औरंगाबाद घूमने का सबसे अच्छा समय अक्टूबर से मार्च के बीच का। औरंगाबाद के साथ ही हम अजंता की गुफाएं भी देख सकते है।

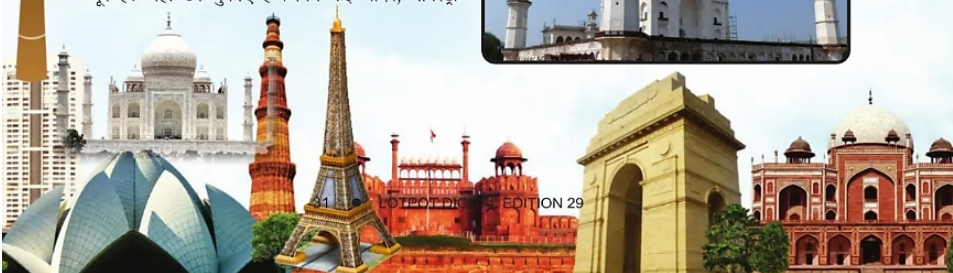

स्वास्थ्य जानकारी

धूम्रपान के बारे में तथ्य

1. 50 प्रतिशत स्मोकर्स की मृत्यु की वजह धूम्रपान से होने वाले बीमारी होती है।
2. सिगरेट के प्रत्येक कश से जीवन के 6 मिनट कम हो जाते है।
3. सेकेन्ड हैंड धूम्रपान ज्यादा हानिकारक होता है फस्ट हेंड धूम्रपान से।
4. थर्ड हेंड धूम्रपान (धूम्रपान के बचे हुए अवशेष जो फर्नीचर, कपडों पर मिलते हैं) भी सेहत के लिए हानिकारक होते है।
5. हो सकता है बीडी अधिक हानिकारक हो सिगरेट से इसमें तम्बाकू के पौधे का विषैला द्रव होता है।
6. यहां तक की इलेक्ट्रॉनिक सिगरेट के सुरक्षित होने का भी कोई सबूत नहीं है।
7. धूम्रपान सेहत के लिए हानिकारक होता है और कैंसर,सट्रोक,पेपटिक अलसर व हार्ट डिजीज जैसे रोगों का कारण बनता है।
8. दो साल बाद सिगरेट छोड़ने से फेफड़ों के कैंसर को छोड़कर। अन्य सभी रोगों के विकास की संभावना काफी कम हो जाते है
9. धूम्रपान छोड़ने का यह भी मतलब है कि तम्बाकू का सेवन तीन वर्षो तक ना करे।
10. जिन्हे सुबह व खाना खाने के बाद धूम्रपान की आदत हो उन्हें सिगरेट छोड़ने में सबसे ज्यादा दिक्कत होती है।
11. धूम्रपान एक बीमारी है मेडिकल चिकित्सकों द्वारा इसका इलाज जरूरी है।
12. धूम्रपान के हर्बल विकल्प है नीम, लांग, इलाइची, सौफं।
13. सिगरेट छोड़ने वालो को सक्रिय या निष्क्रिय धूम्रपान वातावरण से दूर रहना चाहिए जैसे कि-ऐसी पार्टियों से दूर रहना चाहिए जंहा लोग सिगरेट का सेवन कर रहे हो साथ ही ऐसी फिल्में भी नहीं देखनी चाहिए जिसमें सिगरेट का सेवन करते दिखाया जाए ।
14. वो लोगो जो सिगरेट व तंबाकू छोडना चाहते है उन्हें काउंसलर द्वारा 12-18 बार काउंसलिग सेशन्स लेने चाहिए ।
15. लंग कैंसर व ओरल कैंसर का एक कारण तंबाकू सेवन होता है।
16. एक सत्य यह भी है कि डॉक्टर भी सिगरेट का सेवन करते है इसका मतलब है कि सिगरेट छोड़ना आसान नही है।

ऐलोवेरा

घृत कुमारी या अलो वेरा, जिसे क्वारगंदल, या ग्वारपाठा के नाम से भी जाना जाता है, एक औषधीय पौधे के रूप में विख्यात है।

घृत कुमारी के पौधे ज़्यादातर मुंबई, गुजरात ओर दक्षिण भारत में पाए जाते है। ये भारत के राथंभोर नैशनल पार्क में ज़्यादा पैदा होती है। इसका उल्लेख आयुर्वेद के प्राचीन ग्रंथों में मिलता है।

घृत कुमारी के अर्क का प्रयोग बड़े स्तर पर सौंदर्य प्रसाधन और वैकल्पिक औषधि के रूप में प्रयोग किया जाता है। घृत कुमारी मधुमेह के इलाज में काफी उपयोगी हो सकता है साथ ही यह मानव रक्त में लिपिड का स्तर काफी घटा देता है।

घृत कुमारी का पौधा बिना तने का या फिर छोटे तने का एक गूदेदार और रसीला पौधा होता है जिसकी लंबाई 60 से 100 सेंटीमीटर तक होती है। इसका फैलाव नीचे से निकलती शाखाओं द्वारा होता है। इसकी पत्तियां भालाकार और मोटी होती हैं जिनका रंग हरा, हरा-स्लेटी होता है। पत्ती के किनारों पर सफेद छोटे दाँतों की एक पंक्ति होती है। गर्मी के मौसम में इस पौधे पर पीले रंग के फूल उत्पन्न होते हैं।

ऐलोवेरा के बारे में

ऐलोवेरा जैल का उपयोग सुराइलिस, सनबर्न सूखी त्वचा और फ्रास्ट बाइट के उपचार में किया जाता है।

इस के रस का प्रयोग पाचन शक्तिनियंत्रित करने के लिए भी किया जाता है। अधिक मात्रा में एलोवेरा का प्रयोग घातक हो सकता है ऐलोवेरा जैल का प्रयोग मेकअप उतारने के लिये भी किया जा सकता है। बालों को नरम रखने के लिए कंडीशनर के रूप में भी इस का प्रयोग किया जा सकता है।

प्रधानमंत्री मोदी जी की दिनचर्या

सबेरे 4:45 बजे जागना:
आपका सोने का समय जो कुछ भी हो, पर जागने का समय निश्चित 4रू45 है।
प्रति दिन सबेरे आप 30 मिनट शौच–स्नान इत्यादि में लगाते हैं।
साथ–साथ प्रमुख समाचारों को भी देख लेते हैं।
पश्चात 30 मिनट योगासन, व्यायाम करते हैं एवं गत दिवस के संसार के समाचारों का चयन, और भारत के और भाजप के समाचारों की (चयनित) ध्वनि मुद्रिका (रिकार्डिंग) सुनते हैं।
तदुपरान्त मंदिर में बैठ, 10 मिनट ध्यान करते हैं।
फिर एक कप चाय लेते हैं। साथ कोई अल्पाहार (नाश्ता) नहीं लेते।
प्रातः 6:15 बजे एक शासकीय विभाग आपके बैठक कक्ष में प्रस्तुति के लिए सजा रहता है। उनकी प्रस्तुति होती है।
07:00 से 09:00 आई हुईं सारी संचिकाएँ (फाइलों को) देख लेते हैं।
और फिर अपनी माताजी से दूरभाष (फोन) पर बात होती है। कुशल–क्षेम, स्वास्थ्य समाचार पूछते हैं।
(भारत का प्रधानमँत्री अपनी माँ के लिए समय निकालता है। क्या, हम भी अपनी माँ के लिए ऐसा समय निकाल पाते हैं? या हम प्रधानमँत्री जी से अधिक व्यस्त हैं?)

अल्पाहार:
सुबह 09:00 बजे गाजर और अन्य शाक–फल इत्यादि का अल्पाहार होता है।
साथ ही निम्न विधि से बना हुआ पंचामृत (पेय) पीते हैं। (पंचामृत विधिरू 20 मि.ली. मधु, 10 मि.ली. देशी गौ का घी, पुदीना, तुलसी, और नीम की कोमल पत्तियों का रस।)

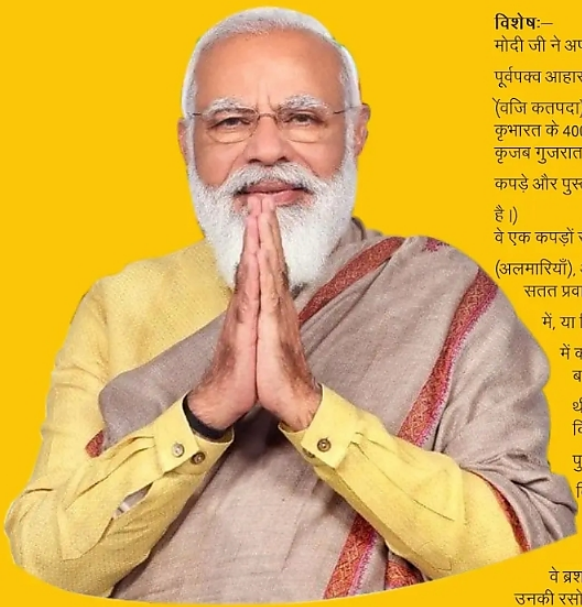

कार्यालयः–
सुबह 09:15 बजे कार्यालय पहुँचकर महत्वपूर्ण बैठकें करते हैं।

भोजनः–
दोपहर भोजन में पाँच वस्तुएँ होती हैं। (गुजराती रोटी, शाक, दाल, सलाद, छाछ।)
संध्या को चार बजे बिना दूध की नीबू वाली चाय पीते हैं। और शाम 06:00 बजे खिचडी और दूध का भोजन।
रात्रि 09:00 बजे देशी गाय का दूध एक गिलास, सौंठ (अदरक का चूर्ण) डालकर।
मुखवास में, नीबू, काली मिर्च, और भुंजी हुयी अजवाईन (जिससे वायु प्रकोप नहीं होता) का मिश्रण।

घूमनाः–
रात्रि 09:00 से 09:30 बजे घूमना। किसी एक विषय के 'जानकार' से चर्चा करते हुए साथ घूमते हैं।
रात्रि 09:30 से 10:00 बजे सामाजिक संचार माध्यम, साथ–साथ चुने हुए पत्रों के उत्तर देते हैं।

विशेषः–
मोदी जी ने अपने जीवन में कभी भी पहले से बना बनाया, पूर्वपक्व आहार, नहीं खाया, और न ही कभी बना बनाया पेय (वंजि कतपदा) पिया है।
कृभारत के 400 जिलों का प्रवास आपने किया हुआ है।
कृजब गुजरात से दिल्ली गए, तो दो ही वस्तुएँ साथ ले गए। कपड़े और पुस्तकें। (उन्हें स्वभावतः, कपड़ो की विशेष रुचि है।)
वे एक कपड़ों से भरी हुई, और 06 पुस्तकों से भरी हुई (अलमारियाँ), अपने साथ ले गए।
सतत प्रवास में आप रात को किसी संत कअसाथ आश्रम में, या किसी छोटे कार्यकर्ता के घर रुकते थे। होटल में कभी नहीं।
बड़नगर वाचनालय की सारी पुस्तकें आपने पढी थी।
किसी प्रसंग विशेष पर आप निजी उपहार में, पुस्तक ही देते थे। गत एक दशक में नव विवाहितों को "सिंह पुरुष" पुस्तक उपहार में देते थे। अब भारत के प्रधानमंत्री के नाते "भगवदगीता उपहार में देते हैं।
वे ब्रश से नहीं, करंज का दातून करते हैं।
उनकी रसोई में नमक नहीं, पर सैंधा नमक का प्रयोग होता है।
प्रवास की समयावधि में संचिकाएँ (फाईलें), और चर्चा करने वाले मंत्री साथ होते हैं।
इस आयु में भी वे सीढ़ी पर कठडो का आश्रय नहीं लेते।
एक दिन में उन्होंने,19 तक, सभाएँ की हैं।
आँख त्रिफला के पानी से धोते हैं। त्रिफला= (हरड, आँवला, बहेडा) चूर्ण रात को भिगोकर सबेरे उस का पानी।)
गुजरात में मुख्यमंत्री थे तब, एक बार स्वाईन फ्लू और एक बार दाढ़ की पीड़ा के समय आप को डॉक्टर की आवश्यकता पडी थी।
प्रधानमंत्री पद पर आने के पश्चात, गुजरात के भाजपा के कार्यकर्ताओं को दुःखद प्रसंग पर, सांत्वना देने के लिए अभी भी अवश्य दूरभाष करते हैं। (बड़े बनने पर भूले नहीं है।)
आप की निजी सेवा में नियुक्त सभी कर्मचारियों की संतानों की शिक्षा एवं विशेष प्रवृत्तियों के विषय में आप जानकारी रखते हैं। और पूछ–ताछ करते रहते हैं!

दूसरों का बुरा करने से अपना बुरा होता है

सुलेना मजुमदार अरोरा

एक जंगल में एक लकड़बग्घा रहता था। वो बहुत ही चालाक, लालची और आलसी था। बड़ी होशियारी से वो दूसरे जानवरों द्वारा किये गए शिकार पर नजर रखता था और जैसे ही कोई जानवर अपने लिए कोई शिकार करता तो वो झपट्टा मार कर उससे शिकार छीन लेता था। उसकी इस आदत से जंगल के सभी प्राणी परेशान थे। एक दिन लकड़बग्घे को नदी किनारे एक मगरमच्छ दिखा जो शायद किसी शिकारी के तीर से घायल हो गया था। लकड़बग्घे ने मगरमच्छ को घेर लिया और उसे खींचकर अपनी मांद में ले जाने की कोशिश करने लगा। मगरमच्छ ने उससे विनती की कि वो उसे छोड़ दे, बदले में वो उसके लिए नदी से रोज मछलियां पकड़ कर लाएगा। लेकिन लकड़बग्घा इतने बड़े शिकार को भला कैसे छोड़ देता। उसने हँसते हुए कहा, 'वाह, तुम तो बड़े चालाक हो, मुझे मछली का लालच देकर खुद नदी में भाग जाना चाहते हो, पर मैं तुम्हे नहीं जाने दूँगा।' मगरमच्छ सोच में पड़ गया कि किस तरह इस लालची लकड़बग्घे के चंगूल से बचा जाए और किस तरह अपने शरीर मे धँसे तीर को निकाल पाए। अचानक उसे याद आ गया कि ये लकड़बग्घा अपनी लालच और आलस के लिए पूरे जंगल में मशहूर है। हालांकि वो बहुत चालबाज था लेकिन जरूरत से ज्यादा चालाकी के कारण कभी कभी मूर्खता भी कर बैठता था। कुछ सोचकर मगरमच्छ ने घड़ियाली आँसू बहाते हुए लकड़बग्घे से कहा, 'ठीक है भैया, तुम मेरे साथ चाहे जो मर्जी कर सकते हो। लेकिन मेरी आखिरी इच्छा है कि मैं कोई अच्छा काम कर के इस दुनिया से विदा लूं ताकि मरने के बाद सीधा स्वर्ग मिल सके और उस अच्छे काम से तुम्हारा भी कुछ भला करके जाऊँ।' यह सुनकर लकड़बग्घा लालच में आ गया, और बोला, 'ठीक है, बता, क्या है तेरी अंतिम इच्छा और उससे मुझे क्या फायदा होने वाला है?' मगरमच्छ ने कहा, 'मेरे शरीर में ये जो तीर फंसा हुआ है, ये जादुई तीर है, जो इसे निकाल कर चबा जाएगा उसे जिंदगी में कभी शिकार करने की जरूरत नहीं पड़ेगी। शिकार खुद चलकर उसके दरवाजे पर आ जाएगा।' यह सुनकर मूर्ख, आलसी लकड़बग्घा खुशी से उछल पड़ा, उसने सच्चाई की जाँच पड़ताल किए बिना ही तुरंत मगरमच्छ के शरीर से तीर निकाला और चबाने लगा। थोड़ी देर चबाने के बाद जैसे ही उसने तीर को निगलने की कोशिश की वो उसके गले में फँस गया। वो दर्द से चींखने चिल्लाने लगा। लेकिन उसे बचाने कोई नहीं आया। मगरमच्छ ने भी नदी में छलांग लगाते हुए कहा, 'दूसरों का बुरा चाहने से खुद का बुरा होता है।'

इस कहानी से हमें ये सीख मिलती है कि हमें दूसरों के लिए कभी बुरा नहीं सोचना चाहिए।

MOTU PATLU

Asian Academy Creative Award 2020

National Winner Best Animated Program or Series (2D or 3D)

लोटपोट

Congratulations to -

Maya Digital Studios & Nickelodeon India

By

P. K. Bajaj, Aman Bajaj